प्रलिम्सि फैक्ट्स: 28 सतिंबर, 2020

- [भगत सहि](#)
- [सैंडलवुड स्पाइक डसीिज़](#)
- [कक्षाओं के लयि रेडयिो](#)
- [डेटा सोनफिकिशन](#)

भगत सहि

Bhagat Singh

27 सतिंबर, 2020 को भारतीय प्रधानमंत्री ने शहीद भगत सहि की 113वीं जयंती से एक दनि पहले उनको श्रद्धांजलदिी और उन्हें बहादुरी एवं साहस का प्रतीक बताया।

//

प्रमुख बदिु:

- भगत सहि का जन्म 28 सतिंबर, 1907 को ब्रटिशि भारत के पंजाब प्रांत के लायलपुर ज़लि में हुआ था। जो वर्तमान में पाकस्तिान में है।
- वर्ष 1919 में 12 साल की उम्र में भगत सहि ने [जलयिांवाला बाग हत्याकांड](#) के स्थल का दौरा कयिा था जहाँ एक सार्वजनकि सभा के दौरान हज़ारों नहित्थे लोगों को मार दयिा गया था।
- [चौरी-चौरा घटना](#) के कारण महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन समाप्त कर देने के कारण भगत सहि का गांधी जी के अहसिा दर्शन से मोह भंग हो गया।
  - इसके बाद भगत सहि '**युवा क्रांतकिारी आंदोलन**' (Young Revolutionary Movement) में शामलि हो गए और भारत से ब्रटिशि सरकार को हसिक तरीके से हटाने की वकालत करने लगे।
- वर्ष 1923 में भगत सहि ने लाहौर के 'नेशनल कॉलेज' में दाखलि लयिा जहाँ उन्होंने नाट्य समाज की तरह पाठ्येतर गतविधियिों (Extra-curricular Activities) में भी भाग लयिा।
- भगत सहि, करतार सहि सराभा को अपना आदर्श मानते थे। जो गदर पार्टी के संस्थापक सदस्य थे।
- भगत सहि **अराजकतावाद** (Anarchism) एवं **साम्यवाद** (Communism) के प्रतआिकर्षति थे। वह मखिाइल बकुननि (Mikhail Bakunin) की शक्षिाओं के एक उत्साही पाठक थे और कार्ल मार्क्स, व्लादमीर लेननि और लयिोन ट्रॉट्स्की (Leon Trotsky) को भी पढ़ते थे।
- **ज्युसेपे मैज़नी** (Giuseppe Mazzini) के 'युवा इटली आंदोलन' (Young Italy Movement) से प्रेरति होकर उन्होंने मार्च, 1926 में भारतीय समाजवादी युवा संगठन '**नौजवान भारत सभा**' (Naujawan Bharat Sabha) की स्थापना की।

- ज्युसेपे मैज़िनी इटली के राजनेता, पत्रकार, इटली के एकीकरण के लिये एक कार्यकर्त्ता एवं इतालवी क्रांतिकारी आंदोलन के प्रमुख थे।
- वे राजतंत्र के घोर विरोधी थे। उनके प्रयासों से इटली स्वतंत्र एवं एकीकृत हुआ।
- वीर सावरकर मैज़िनी को अपना आदर्श नायक और लाला लाजपत राय मैज़िनी को अपना राजनीतिक गुरू मानते थे। बाद में लाला लाजपत राय ने मैज़िनी की प्रसिद्ध रचना 'द ड्यूटीज़ ऑफ मैन' (The Duties of Man) का उर्दू में अनुवाद किया।

- भगत सिंह '**हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन**' (Hindustan Republican Association) में भी शामिल हुए जिसके प्रमुख नेता चंद्रशेखर आज़ाद, राम प्रसाद बिस्मिल एवं शाहिद अशफाकल्लाह खान थे।
  - देश में उचित ढंग से क्रांतिकारी आंदोलन का संचालन करने के उद्देश्य से अक्तूबर, 1924 में युवा क्रांतिकारियों ने कानपुर में एक सम्मेलन बुलाया तथा '[हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन]' (Hindustan Republican Association) नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की। इसके संस्थापक शचींद्र नाथ सान्याल (अध्यक्ष), राम प्रसाद बिस्मिल, जोगेश चंद्र चटर्जी तथा चंद्रशेखर आज़ाद थे।
  - वर्ष 1928 में चंद्रशेखर आज़ाद के नेतृत्त्व में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में '**हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन**' का नाम बदलकर '[हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन]' (Hindustan Socialist Republican Association- HSRA) कर दिया गया जिसका उद्देश्य भारत में एक समाजवादी, गणतंत्रवादी राज्य की स्थापना करना था।
- साइमन कमीशन के विरोध के समय लाला लाजपत राय पर लाठियों का प्रहार करने वाले सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स की 30 अक्तूबर, 1928 को भगत सिंह, चंद्र शेखर आज़ाद तथा राजगुरु द्वारा की गई हत्या इस संगठन (HSRA) की पहली क्रांतिकारी गतिविधि थी।
- HSRA के दो सदस्यों भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली में केंद्रीय विधानसभा में बम फेंका, दोनों को गिरफ्तार कर केंद्रीय असेंबली बम कांड के अंतर्गत मुकदमा चलाया गया। बाद में इस संगठन के अन्य सदस्यों को भी गिरफ्तार कर कुल 16 क्रांतिकारियों के ऊपर लाहौर षड्यंत्र कांड के अंतर्गत मुकदमा चलाया गया।
- भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा दी गई। 23 मार्च, 1931 को इन तीनों को फांसी दे दी गई।
- चोरी-छिपे उनका अंतिम संस्कार पंजाब प्रांत के फिरोजपुर ज़िले में सतलज नदी के तट पर किया गया जहाँ वर्तमान में **शहीद भगत सिंह स्मारक** स्थित है।
- 'इंकलाब जिंदाबाद' का पहली बार नारे के रूप में प्रयोग भगत सिंह ने किया था। भगत सिंह ने ही इस नारे को चर्चित बनाया था।

सैंडलवुड स्पाइक डिसीज़

Sandalwood Spike Disease

भारत में सैंडलवुड अर्थात् चंदन के वृक्ष विनाशकारी **सैंडलवुड स्पाइक डिसीज़** (Sandalwood Spike Disease- SSD) के कारण एक गंभीर खतरे का सामना कर रहे हैं।

प्रमुख बिंदु:

- सैंडलवुड अर्थात् चंदन के वृक्षों को भारत विशेषकर कर्नाटक का गौरव माना जाता है।
- उल्लेखनीय है कि कर्नाटक एवं केरल में इन सुगंधित वृक्षों के प्राकृतिक आवास में सैंडलवुड स्पाइक डिसीज़ का संक्रमण फिर से फैल गया है।
- केरल के मरयूर (Marayoor) में चंदन के पेड़ों की प्राकृतिक आबादी और कर्नाटक में एमएम हिल्स (MM Hills) सहित विभिन्न आरक्षित वन, सैंडलवुड स्पाइक डिसीज़ (SSD) से बहुत अधिक संक्रमित हैं जिसका कोई इलाज नहीं है।
- वर्तमान में इस रोग के प्रसार को रोकने के लिये संक्रमित पेड़ को काटने एवं हटाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

सैंडलवुड स्पाइक डिसीज़

Sandalwood Spike Disease- SSD):

- सैंडलवुड स्पाइक डिसीज़ (SSD), फाइटोप्लाज़्मा (Phytoplasma) अर्थात् 'पौधे के ऊतकों के जीवाणु परजीवी' के कारण होता है जो कीट वैक्टर (Insect Vectors) द्वारा प्रेषित होते हैं।
- इस रोग के कारण प्रत्येक वर्ष 1 से 5% चंदन के पेड़ नष्ट हो जाते हैं। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि यदि इसके प्रसार को रोकने के लिये उपाय नहीं किये गए तो यह रोग चंदन के वृक्षों की पूरी प्राकृतिक आबादी को नष्ट कर सकता है।
    - इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा कि यदि इस संक्रमण को रोकने में देरी की गई तो यह बीमारी अपरिपक्व चंदन के वृक्षों में भी फैल सकती है।

संक्रमण को रोकने के लिये किये गए उपाय:

- वर्ष 1899 में कर्नाटक के कोडागु (Kodagu) ज़िले में पहली बार इस रोग के बारे में सूचना मिली थी। वर्ष 1903 से वर्ष 1916 के बीच कोडागु (Kodagu) एवं मैसूर क्षेत्र में एक मिलियन से अधिक चंदन के पेड़ हटा दिये गए।
- वर्ष 1907 में तत्कालीन मैसूर के महाराजा ने इस रोग का इलाज खोजने वाले को 10,000 का इनाम देने की घोषणा की थी।
- बाद में वर्ष 1917-1925 के दौरान इस रोग के कारण सलेम में भी 98,734 चंदन के पेड़ काट दिये गए।

IUCN की रेड लिस्ट में स्थिति:

- चंदन के वृक्षों के प्राकृतिक आवासों में विनाशकारी रोग के कारण चंदन को वर्ष 1998 में IUCN की रेड लिस्ट में '**सुभेद्य**' (Vulnerable) श्रेणी में वर्गीकृत किया गया था।

वर्तमान में सैंडलवुड का क्षेत्र:

- वर्तमान में चंदन की प्राकृतिक आबादी केरल के मरयूर में और कर्नाटक में आरक्षित वनों एवं आसपास के क्षेत्रों के कुछ स्थानों में फैली हुई है। जो सैंडलवुड स्पाइक डिसीज़ (SSD) से बहुत अधिक संक्रमित हैं।

रोग का प्रभाव:

- देश में एक सदी से अधिक समय से चंदन के उत्पादन में गिरावट का एक प्रमुख कारण सैंडलवुड स्पाइक डिसीज़ (SSD) रहा है।
- उत्पादन में कमी के कारण मुख्य रूप से 20% की दर से वर्ष 1995 से भारतीय चंदन एवं उसके तेल की कीमत में काफी वृद्धि हुई है।

सैंडलवुड का ऐतिहासिक महत्त्व:

- भारत इत्र एवं फार्मास्यूटिकल्स के लिये चंदन के तेल उत्पादन का पारंपरिक देश रहा है। वर्ष 1792 की शुरुआत में, टीपू सुल्तान ने इसे मैसूर का 'रॉयल ट्री' घोषित किया था।

कक्षाओं के लिये रेडियो

Radio for Classes

ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान मोबाइल कनेक्टिविटी न होने के कारण अधिकांश छात्र/छात्राएँ शिक्षा से वंचित हो रहे हैं इसलिये ओडिशा सरकार ने राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों में बच्चों तक शिक्षा पहुँचाने के लिये अब रेडियो का इस्तेमाल करने का निर्णय किया है।

प्रमुख बिंदु:

- ओडिशा सरकार के इस निर्णय के तहत ओडिशा का स्कूल एवं मास एजुकेशन डिपार्टमेंट (School and Mass Education Department) 28 सितंबर, 2020 से **ऑल इंडिया रेडियो** के माध्यम से कक्षा शिक्षण शुरू करेगा।
- चूँकि COVID-19 महामारी के मद्देनज़र स्कूल न खोले जाने के कारण स्मार्ट फोन के द्वारा ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से छात्रों तक पहुँचने की कोशिश की गई थी।
    - जिनमें से ओडिशा के 60 लाख छात्रों में से लॉकडाउन के दौरान मुश्किल से 22 लाख तक ही ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम पहुँचा जा रहा था।
    - किंतु लॉकडाउन खुलने के बाद घरों में माता-पिता द्वारा एकमात्र स्मार्ट फोन को लेकर ऑफिस या कार्य पर जाने के कारण इस यह संख्या घटकर लगभग 6 से 7 लाख ही रह गई।

रेडियो आधारित कक्षाएँ:

- महंगे स्मार्ट फोन की तुलना में रेडियो सस्ता है और इसकी आवर्ती लागत भी कम है। अतः रेडियो स्कूल कार्यक्रम के साथ और अधिक छात्रों को शामिल करने की उम्मीद की गई है।
- कक्षा एक से आठवीं तक के छात्र 15 मिनट के शिक्षण के माध्यम से अनुभवी शिक्षकों द्वारा रेडियो के माध्यम से अपना पाठ सीख सकते हैं।
    - एक छात्र रेडियो कार्यक्रम के 15 मिनट के भीतर अपनी पाठ्यपुस्तक के छह पृष्ठों को कवर कर सकता है।
- यह रोजाना सुबह 10 बजे से 10.15 बजे तक उपलब्ध रहेगा।
- गौरतलब है कि ओडिशा में स्कूल 17 मार्च से बंद हैं। हालाँकि बच्चों को पाठ्यपुस्तकें प्रदान की गई हैं।
    - चूँकि स्कूलों को बंद करने के कारण काफी समय नष्ट हो गया है इसलिये स्कूल के सिलेबस में 30% की कमी की गई है।

डेटा सोनफिकिेशन

Data Sonification

यद्यपि टेलीस्कोप, 'डिजिटिल डेटा' को आश्चर्यजनक छवियों में परिवर्तित करके बाहरी स्थान की झलक प्रदान करते हैं, अतः नासा (NASA) के **चंद्र एक्स-रे केंद्र** (Chandra X-Ray Center- CXC) ने एक नई '**सोनफिकिेशन परियोजना**' (Sonification Project) का अनावरण किया है जो खगोलीय छवियों से प्राप्त डेटा को ऑडियो में परिवर्तित करता है।

प्रमुख बिंदु:

- उपयोगकर्त्ता अब '**गैलेक्टिक सेंटर**' (Galactic Centre) की छवियों को सुन सकते हैं।
  - गैलेक्टिक सेंटर में **कैसिओपिया ए** (Cassiopeia A) नामक सुपरनोवा का अवशेष और साथ ही '**पिलर्स ऑफ क्रिएशन नेबुला**' (Pillars of Creation Nebula) शामिल हैं ये सभी पृथ्वी से लगभग 26,000 प्रकाश वर्ष दूर एक क्षेत्र में स्थित हैं।
- डेटा को नासा के चंद्र एक्स-रे आब्ज़र्वेटरी, हबल स्पेस टेलीस्कोप एवं स्पिट्ज़र स्पेस टेलीस्कोप द्वारा एकत्र किया गया है, जिनमें से प्रत्येक को एक अलग संगीत 'इंस्ट्रूमेंट' द्वारा दर्शाया गया है।

डेटा सोनफिकिेशन:

- डेटा सोनफिकिेशन, वास्तविक डेटा को प्रदर्शित करने के लिये ध्वनि तरंगों के उपयोग को संदर्भित करता है। अर्थात् यह डेटा विज़ुअलाइज़ेशन (Data Visualisation) का श्रवण संस्करण (Auditory Version) है। उदाहरण के लिये नासा की हालिया चंद्र परियोजना (Chandra Project) में, कई संगीत ध्वनियों का उपयोग करके डेटा को प्रदर्शित करने के लिये किया जाता है।
- इस डेटा सोनफिकिेशन परियोजना के तहत उपयोगकर्त्ता अब एक खगोलीय अनुभव के रूप में खगोलीय छवियों में कैद विभिन्न घटनाओं का श्रवण संबंधी अनुभव कर सकते हैं। जैसे- एक तारे का जन्म, धूल का एक बादल, एक ब्लैक होल की उच्च या निम्न पिच वाली ध्वनि के रूप में सुना जा सकता है।

'गैलेक्टिक सेंटर' (Galactic Centre):

- गैलेक्टिक सेंटर का सबसे प्रमुख उदाहरण मिल्की वे आकाशगंगा का घूर्णन केंद्र है। इसमें खगोलीय पिंडों का एक संग्रह न्यूट्रॉन एवं सफेद बौने तारे, धूल एवं गैस के बादल, एक सुपरमैसिव ब्लैक होल जिसे **धनु A*** (Sagittarius A*) कहा जाता है जिसका वजन सूर्य के द्रव्यमान का चार मिलियन गुना है, शामिल हैं।

कैसिओपिया ए (Cassiopeia A):

- नासा के अनुसार, उत्तरी कैसिओपिया नक्षत्र (northern Cassiopeia constellation) में पृथ्वी से लगभग 11,000 प्रकाश वर्ष दूर स्थित कैसिओपिया ए एक सुपरमैसिव तारे के सबसे प्रसिद्ध अवशेषों में से एक है जो लगभग 325 वर्ष पहले एक सुपरनोवा विस्फोट से नष्ट हो गया था।

'पिलर्स ऑफ क्रिएशन' (Pillars of Creation):

- 'पिलर्स ऑफ क्रिएशन', ईगल नेबुला (Eagle Nebula) के केंद्र में अवस्थित है, जिसे मेसियर 16 (Messier 16) के रूप में भी जाना जाता है।

महत्त्व:

- नासा के **यूनिवर्स ऑफ लर्निंग प्रोग्राम** (Universe of Learning Program) के सहयोग से **चंद्रा एक्स-रे केंद्र** के नेतृत्त्व में इस परियोजना को क्रियान्वित किया गया। जिसका उद्देश्य सभी उम्र के शिक्षार्थियों के लिये प्रभावी रूप से एवं कुशलता से सीखने के लिये नासा विज्ञान सामग्री को शामिल करना है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/prelims-facts-28-september-2020